Dr. M. Sharma - Journal - Article

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

ہندستانی پرچار سبھا

हिन्दुस्तानी ज़बान

वर्ष 55 अंक 2 मुंबई अप्रैल-जून 2023 पृष्ठ 84 ₹ 70

ISSN 0378-3928

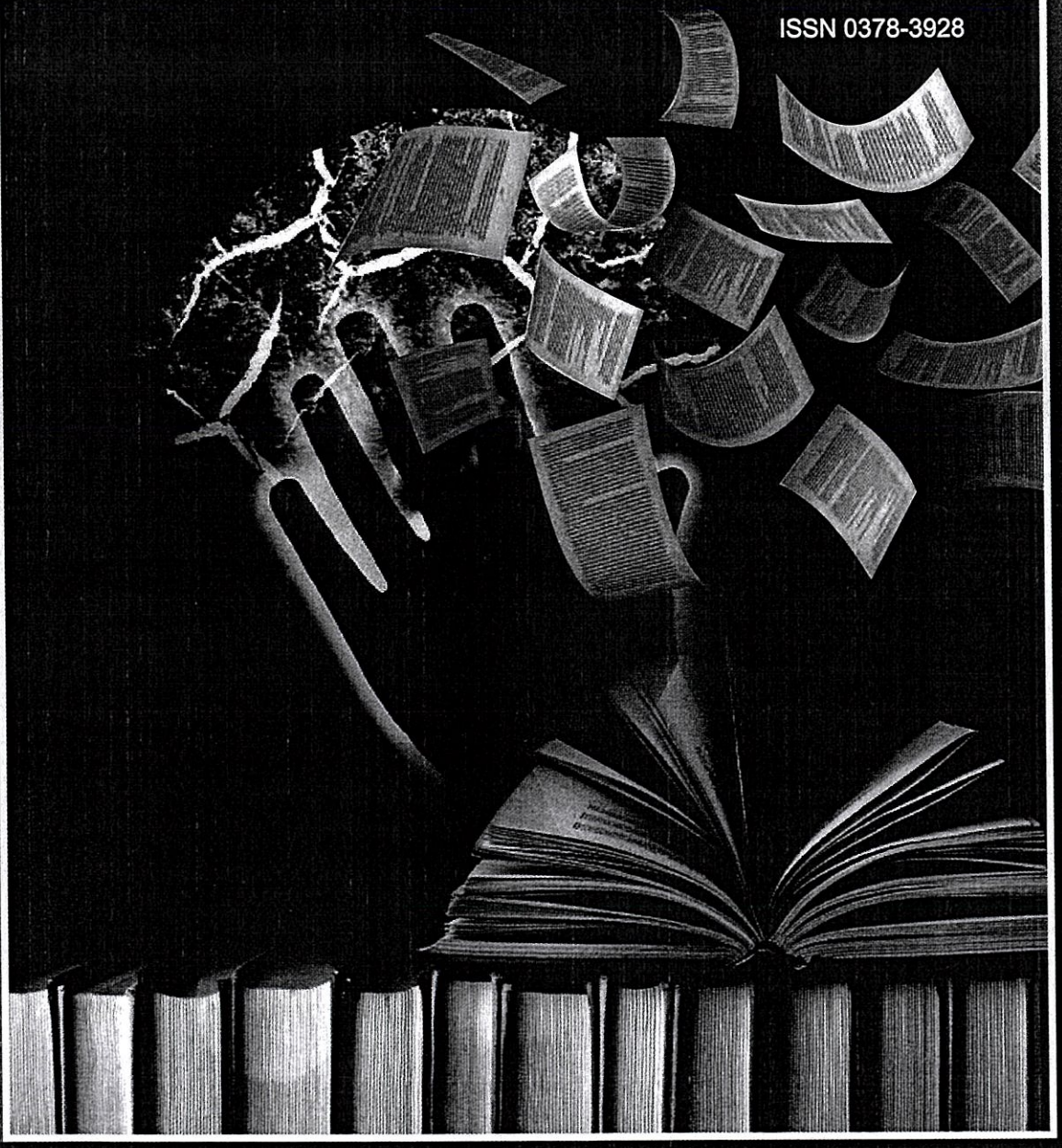

TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

हिन्दुस्तानी ज़बान

(त्रैमासिक पत्रिका)

स्थापना : अक्तूबर 1969

पंजीयन संख्या 18818/1969 के अन्तर्गत भारत के समाचार पत्र रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत

वर्ष : 55 | अप्रैल-जून 2023 | अंक : 02

प्रकाशक

फ़िरोज़ पैच

ट्रस्टी व मानद सचिव

संपादक

संजीव निगम

संपादन सहयोग

राकेश कुमार त्रिपाठी

सुरेश प्रताप सिंह

आवरण पृष्ठ / चित्रांकन

सुधीर खेडेकर

संपादकीय पता

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

महात्मा गाँधी मेमोरियल बिल्डिंग

7, नेताजी सुभाष रोड, मुंबई - 400 002

मो. : 96646 69822/98194 98213

ई-मेल: hps.hindi@gmail.com

वेबसाइट : www.hpsmumbai.org

एक प्रति (साधारण डाक)	:	₹ 70/-
वार्षिक (साधारण डाक)	:	₹ 250/-
त्रैवार्षिक (साधारण डाक)	:	₹ 750/-
विदेशों के लिए (एक प्रति)	:	₹ 700/-
विदेशों के लिए (वार्षिक सद.)	:	₹ 2500/-

(रजिस्टर्ड डाक से मँगवाने का खर्च रु. 270/- प्रतिवर्ष अतिरिक्त देय होगा।)

चेक/बैंक ड्राफ्ट/नकद/Online Subscription Hindustani Prachar Sabha के नाम भेंजे।

(यूजीसी केयर सूची में शामिल)

इस अंक में .....

संपादकीय

- **नयी शिक्षा नीति 2020/5**
  संजीव निगम

गाँधी विचार

- **हिन्दू, उर्दू, हिन्दुस्तानी और महात्मा गाँधी/7**
  डॉ. आकाश वर्मा

आलेख

- **विश्व फलक पर हिन्दी : कुछ अहम सवाल, कुछ बुनियादी समस्याएँ/10**
  डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव
- **तकनीकी युग में पुस्तकों का महत्त्व/14**
  रंजना मिश्रा
- **द्विजेन्द्र साहित्य : भाषा/17**
  डॉ. मिथिलेश शर्मा
- **प्रकृति से सीखें जीवन के पाठ /21**
  शिखर चंद जैन
- **आजादी के पचहत्तर वर्ष और हिन्दी महिला उपन्यासकार/23**
  डॉ. संदेशा भावसार
- **भारतियार की नारी मुक्ति/28**
  डॉ. शक्तिराज
- **एआई और साहित्य/31**
  प्रो. मोहसिन अली खान
- **श्री अन्न : समग्र विकास का माध्यम/35**
  डॉ. दीपक कोहली

Certified as TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

कहानी

- **भगवान को हाजिर-नाजिर मानकर/38**
  सुषमा मुनीन्द्र
- **गंगाघाट की गोमती/46**
  संदीप शर्मा
- **गृहस्थी/50**
  राजेन्द्र परदेसी
- **लाक्षागृह/53**
  डॉ. रंजना जायसवाल

लोककथा

- **धोन चोलेचा/56**
  किशोर दिवसे

व्यंग्य

- **कुत्ते की टेढ़ी पूँछ और कुत्तत्व /59**
  श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'
- **क़ासिद के आते-आते.../61**
  हरीश कुमार 'अमित'

साक्षात्कार

- **हमें अपनी लड़ाई खुद लड़नी होगी /62**
  डॉ. मधुबाला शुक्ला

यात्रा-वृत्तांत

- **सोये हुए दैत्य का उद्यान/65**
  भावना सक्सैना

संस्मरण

- **खोये हुए लोगों का शहर/68**
  अशोक भौमिक

कविता

- **रमई काका और राघोमल.../72**
  लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
- **माँ/73**
  रमेश चन्द्र पंत
- **माँ की तरह चिड़िया.../74**
  संजीव ठाकुर
- **हरसिंगार की बारिश.../75**
  रेखा शाह आरबी
- **दोहे /76**
  डॉ. जयसिंह अलवरी

गज़ल

- **गज़ल/77**
  श्रीमती आशा पांडेय
- **गज़ल/78**
  नवीन सी. चतुर्वेदी

विविध पुस्तकें/79

सभा की गतिविधियाँ/81

- 'हिन्दुस्तानी ज़बान' में प्रकाशित लेखों के उपयोग के लिए लेखक और प्रकाशक से अनुमति लेना आवश्यक है।
- 'हिन्दुस्तानी ज़बान' में प्रकाशित रचना के विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। संपादक या प्रकाशक का उनसे सहमत होना जरूरी नहीं है।
- लेखक टाइप किये हुए या स्पष्ट अक्षरों में लिखी रचना की मूल प्रति ही भेजें। अस्वीकृत रचनाएँ लौटायी नहीं जायेंगी।
- 'हिन्दुस्तानी ज़बान' संबंधी सारे विवाद केवल मुंबई उच्च न्यायालय के ही अधीन होंगे।

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

आलेख

द्विजेन्द्र साहित्य : भाषा

डॉ. मिथिलेश शर्मा

पंडित देवीदत्त त्रिपाठी 'दत्त द्विजेन्द्र' भारतेन्दु युग के एक समर्थ कवि हैं, इसलिए उस युग की भाषा सम्बन्धी अवधारणा से उनकी सोच अलग नहीं है। फोर्ट विलियम कॉलेज के हिंदी विभाग में लल्लूलाल और सदल मिश्र द्वारा हिंदी पाठ्यपुस्तक हेतु खड़ी बोली का चयन तथा भारतीय नवजागरण में समाज सुधारकों द्वारा जनभाषा के रूप में खड़ी बोली के प्रयोग से भारतेन्दु मंडल के रचनाकार ब्रज मिश्रित खड़ी बोली को साहित्य की भाषा के रूप में स्वीकार करते हैं। दरअसल भारतेन्दु युग भाषा के स्थिर किरण का युग था। भाषा को स्थिर करने में भारतेन्दु के महत्त्व को भुलाया नहीं जा सकता, साथ ही उस युग के उन रचनाकारों को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, जिन्होंने भारतेन्दु के भाषा सम्बन्धी कार्य को आगे बढ़ाया। लेकिन, इस प्रयास के बावजूद उस युग के रचनाकारों के साहित्य में भाषा सम्बन्धी अशुद्धियाँ थीं, ब्रज भाषा का प्रभाव था और क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव तो था ही। गद्य में भले ही खड़ी बोली का प्रयोग किया गया, लेकिन काव्य के क्षेत्र में अभी भी ब्रज भाषा अपनी पैठ बनाये हुए थी। खड़ी बोली में छिट-पुट पद्य लिखने की कोशिशें भी हुईं, लेकिन वे सफल नहीं हुईं, कारण कि खड़ी बोली को कविता के लायक समझा ही नहीं जाता था। वास्तव में दत्त द्विजेन्द्र काव्यभाषा की इस सोच से मुक्त नहीं हैं। वे अपनी काव्य रचनाओं में प्रधानतः ब्रज भाषा का ही प्रयोग करते हैं। ताराष्टक, ललिताशतक, कनवजिया, कीर्तिकुमुद, विक्टोरिया शोक, मंगलमाला, कारोनेशन प्रशंसा, कान्यकुब्ज प्रबोधनम्, प्लेग प्रपंच, सुहृत्संताप, आदि करीब-करीब सभी ग्रंथों की भाषा ब्रजभाषा ही है। लेकिन, धीरे-धीरे भारतेन्दु युग के उत्तरार्द्ध में काव्यभाषा की यह अवधारणा कमजोर होती गयी और रचनाकारों को ऐसा लगने लगा कि केवल ब्रज भाषा में ही नहीं, बल्कि खड़ी बोली में भी काव्य रचनाएँ की जा सकती हैं। यह युग का दबाव और तत्कालीन जनता की रुचि की माँग ही थी कि पंडित दत्त द्विजेन्द्र जी को अपना 'चम्पू काव्य' ब्रजभाषा और खड़ी बोली के मेल से लिखना पड़ा। उनके ही शब्दों में–''इस ग्रंथ की रचना आज से तीन वर्ष प्रथम की है। उस समय मेरा ध्यान हिन्दी भाषा अर्थात खड़ी बोली में पद्य रचना का न था। जो कि विचार को परिष्कृत होने हेतु समय अभीष्ट है। तथापि कविता की पद्य में कहीं-कहीं खड़ी बोली का समावेश हो गया है। किन्तु पद्य में प्रधानता ब्रजभाषा की ही रही है। प्रिय पाठकों से इसके लिए क्षमा प्रार्थना करके भविष्य के हित प्रतिज्ञा करते हैं कि शीघ्र ही हम कोई ग्रंथ हिन्दी भाषा (खड़ी बोली) गद्य-पद्यमी कविता में रचना कर दिखावेंगे।''[1]

भारतेन्दु युगीन ब्रज भाषा रीतिकालीन भाषा से अपना स्वरूप अलग खड़ा कर रही थी। वह परम्परागत जड़ शब्दों का कवच उतारकर फेंक रही थी और युग सन्दर्भानुकूल नये शब्दों का चयन कर रही थी। उसमें एक खास तरह की रवानगी और जीवन्तता है और यह जीवन्तता पंडित जी के काव्यभाषा की भी विशेषता है। उदाहरणार्थ–''मोह निशा में सोय चुके बहु भाई जागो।/ विद्या जप जप खोय चुके बहु भाई जागो।/ले अंगड़ाई उठो खोलि दृग आलस त्यागो।/सजग होहु उठि बेगि आपने मारग लागो।।''[2]

'ताराष्टक' इनकी प्रथम रचना है। इसलिए उसकी भाषा का स्वरूप बहुत अनगढ़ है। इसकी रचना उन्होंने ब्रजभाषा में की है, लेकिन इसमें वह निखार नहीं है जो उनकी परवर्ती रचनाओं में है। शब्दचयन भीं बहुत अच्छा नहीं है, कहीं-कहीं क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग किया गया है जिससे पाठक को परेशानी हो सकती है। 'पेन्हि', 'राचाउ', 'तुही' आदि सब मिलाकर इसे भाषा की दृष्टि से समर्थ रचना नहीं कहा जा सकता।

'ललिताशतक' उनकी दूसरी काव्य रचना है। भाषा की दृष्टि से यह काफी सशक्त रचना है। इसकी भाषा मूलतः ब्रज है, लेकिन क्रियापद खड़ी बोली के हैं। यहाँ

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

शब्दों के चयन में भी वे अपेक्षाकृत उदार हैं, खास-तौर से ब्रज भाषा का जो आम लोगों के बीच प्रचलित रूप है, उसे अपनाया गया है। कहीं-कहीं उर्दू शब्दों की भरमार है। जैसे–फरमा, बरदारी, अदना, हाल, शान, बेमारी, ख्वाहिशें, न्यामतें, बख्शेगी, हश्मत, बेशक, गुलबालियाँ, मुल्क, गीरी फरागत आदि। उदाहरण के तौर पर एक छंद दृष्टव्य है–''गर ख्वाहिशें मुल्क गीरी हुई हैं तो आराम से एक जा बैठकर आप।/करके फरागत शेवोरोज के काम फिर कीजिए ललिता नाम को जाप।/दत्ते द्विजेन्द्र यकीं है कि शाहान शाहों से दुनिया में बढ़ जाएगी थाप/और आखिरत में मिलेगा व वैकुण्ठ जिसमें न ढूंढें दवा को मिले पाप।।''[3]

'ललिताशतक' की भाषा में अत्यंत प्रवाहशीलता है, ऐसा लगता है कि भाव के साथ भाषा बह गयी है। किन्तु, इस स्थिति में भी पंडित देवीदत्त ने भाषा की सीमाओं का ध्यान रखा है। इस सन्दर्भ में डॉ. दयाशंकर शुक्ल जी ने लिखा है ''दत्त द्विजेन्द्र जी भाषा के सम्बन्ध में अपेक्षाकृत उदार थे।''[4]

'कनवजिया' की भाषा ब्रज है, सरल है किन्तु इसकी सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि यह एक वर्णनात्मक रचना है, इसलिए भाषा के माध्यम से काव्य में जो सौन्दर्य पैदा होना चाहिए, वह नहीं हो पाया है। नामों और कुलों की अफरा-तफरी में सारा सौन्दर्य खो जाता है।

'कीर्तिकुमुद' की भाषा ब्रज है तथा सहज और सरल है। काव्यात्मक दृष्टि से यह भी प्रभावहीन रचना है। 'विक्टोरिया शोक' कविता ब्रज भाषा में ही लिखी गयी है, इसमें काव्यत्व का अभाव खटकता है। अंग्रेजी शब्दों का कहीं-कहीं पुट है। जैसे– 'क्वीन', अनारेब्ल, इम्परर, थैंक्स आदि।[5] इसी प्रकार अनेक उर्दू शब्दों का प्रयोग भी इस कविता में किया गया है। जैसे–हाकिम, अमला, मलका, जरमाना अलमरंजो, गम, मातम, इंसाफ आदि।[6] इन उर्दू और अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग से 'विक्टोरिया शोक' कविता का जो प्रवाह है वह रुकता तो नहीं है, लेकिन सामान्य जनता के लिए दुरूह हो जाता है।

'मंगलमाला' में भी ब्रजभाषा के साथ-साथ अंग्रेजी शब्दों का काफी प्रयोग है। जैसे–''थैंक्स, परेड लेडी, गाड सेव दी किंग, पिन्सफोल्स होटल, चैयर्स, लेक्चर, प्रेस, लायब्रेरी आदि)।[7] इस रचना में अत्यंत सरस काव्य सौन्दर्य की दृष्टि से वर्णन का तरीका इतना प्रभावशाली है कि उससे काव्य सौन्दर्य अपने आप प्रकट हो जाता है।

'कारोनेशन-प्रशंसा' अत्यन्त लघु रचना है, इसकी भाषा भी ब्रज है लेकिन उसमें अंग्रेज़ी और उर्दू के शब्दों का पुट है। जैसे–''खुर्दोकला, रौनक, शौक, शान, रैयत, खुशखुर्रम, दुआ, इन्कटिक्स, बर्बाद, इम्प्रर आदि।[8] 'कान्यकुब्ज प्रबोधनम्' यह एक उपदेशात्मक रचना है, जिसका उद्देश्य अपने कान्यकुब्ज भाइयों को जगाने के लिए है। इसकी भाषा ब्रजभाषा है, लेकिन बहुत सरल व प्रवाहयुक्त है। जो रवानगी भारतेन्दु की भाषा में दिखाई पड़ती है उसका प्रत्यक्ष दर्शन इस काव्य के आरम्भ में ही दर्शनीय है। जैसे–''ब्रिटिश राज्य का भानु आपनो तेज प्रकाश्यो।/निशि अनीति तम घोर पवनकुल को हठि नाश्यो।। /अब जनि सोवहु प्रात कृत्य की बेला आई। उठि मुख धोवहु कहा लेट पोढ़े जमुहाई।।''[9]

प्रस्तुत पंक्तियाँ भारतेन्दु जी की 'भारत-दुर्दशा' का अनायास ही स्मरण कराती हैं–''रोवहु सब मिल आवहु भारत भाई,/हा! हा! भारत दुर्दशा न देखि जाई।।''[10]

इसमें भी ब्रजभाषा के साथ ही उर्दू और अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग है। जैसे–''डेमफूल, जहान, सिरताज आदि। कहीं-कहीं अशुद्ध शब्दों का प्रयोग है। जैसे 'तुमारोही' इसके बावजूद भी काव्यत्व की दृष्टि से यह बहुत समर्थ रचना नहीं है। कारण कि, इसमें अपने विचारों के उद्बोधन के स्वर को बहुत सीधे एवं सपाट ढंग से कह दिया गया है। 'प्लेग-प्रपंच' की भाषा सरल है, प्रवाहयुक्त एवं प्रभावशाली है। रचनाकार ने इसमें करुणा का कुछ ऐसा पुट मिलाया है कि भाषा हृदय को छू जाती है। उद्धरण के तौर पर एक छंद दृष्टव्य है– ''छूटी गयी ममता ककानन की भीतन भी जन बन वागन में बासन लगायो है।/धन सों पुसाक सो सनेही नात गोतिन सों खैंचि मन राम-राम ही में रट लायो है।/भनत विशाल जौन सांच मां दादहू ते तिन-तिन त्यागि मास गिद्धन खवायो है।/पामरन पास सों पुनीत करिबे के हेत महाराज प्लेग कैधों सतयुग आयो है।।''[11]

'सुहृत्संताप' की भाषा ब्रज है जबकि 'नरहरि चम्पू' की भाषा भी प्रधानतः ब्रज है, लेकिन उसमें यत्र-तत्र खड़ी बोली का भी समावेश है। ऐसा लगता है कि 'ताराष्टक' से लेकर 'सुहृत्संताप' तक जो उनका काव्य

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

भाषा सम्बन्धी दृष्टिकोण था, उसमें बदलाव आया। भारतेन्दु युग के कवियों का मानना था कि काव्य में लालित्य पैदा करने की शक्ति केवल ब्रजभाषा में है। लेकिन, द्विवेदी जी के आगमन के पश्चात् भारतेन्दु युगीन यह दृष्टिकोण धीरे-धीरे कमजोर पड़ने लगा और ऐसा माना जाने लगा कि ब्रजभाषा के साथ-साथ खड़ी बोली में भी रचनाएँ की जा सकती हैं। दत्त द्विजेन्द्र जी ने 'नरहरि चम्पू' में ब्रजभाषा के साथ, खड़ी बोली के समावेश की जो बात की है उसका कारण मुझे यही लगता है कि ब्रजभाषा और खड़ी बोली के समावेश के बावजूद इसकी भाषा पहले की रचनाओं से थोड़ी भिन्न है। संस्कृत शब्दों का बहुत गहरा समावेश इसमें दिखाई पड़ता है और द्विवेदी युग की भाषा के प्रभाव की ओर संकेत करता है। चूँकि इसका रचनाकाल 1900 ई. के बाद का है इसलिए द्विवेदी युगीन भाषा से प्रभावित होना असंभव नहीं लगता है। उद्धरण–"ब्रजोद्यान क्षेत्राश्रमा राम ग्रामा।/पुरै खेट देशै दहै जीति कामा।/फिरी तीनहूँ लोक में यों दुहाई। /हिरण्याक्षभ्राता भयो राज राई।।"[12]

भाषा का यह रूप अचानक ही अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की भाषा 'रूपोदयान प्रफुल्ल-प्राय-कलिका, राकेन्दु विम्बनना' की याद दिलाता है। कहीं-कहीं क्लिष्ट शब्दों का समावेश है। तद्भव शब्दों की भी इसमें कमी नहीं है। जैसे-तुही, मुही, तुमारे आदि।

'मिथ्यावासुदेव भाण' भाषा की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण गद्य-पद्यमयी रचना है जिसमें खड़ी बोली की प्रधानता है। भाषा ओज और प्रवाहयुक्त है। उद्धरण–"श्रीपति अति कमनीय कान्ति कीरति मतिवाले।/जग नाटक के सूत्रधार यवनिका संभाले।। /नटवर पट से निकल प्रकट लीला दिखलाई।/रंगभूमि अवतरण पात्र को ढंग बनाई।।"[13]

"मिथ्यावासुदेव भाण" में कहीं-कहीं पर संस्कृत शब्दों तथा उक्तियों का भी प्रयोग है जिससे भाषा दुरूह भी हो गयी है। जैसे–"नास्तिको वेद निन्दकः, रे विक्षिप्त!"[14] किन्तु, कहावतों के प्रयोग से रचना अधिक रोचकपूर्ण हो गयी है। जैसे–"काजर की कोठरी में केसहू प्रवीन जाय एक रेख काजर की लागि है पै लागि है?"[15] आदि।

सब मिलाकर त्रिपाठी जी की भाषा का स्वरूप भारतेन्दु युगीन भाषा से बहुत भिन्न नहीं है। भारतेन्दु जी की काव्य भाषा ब्रज थी इसलिए उन्होंने भी ब्रज को विभाषा के रूप में चुना, लेकिन द्विवेदी युग की भाषा सम्बन्धी दृष्टिकोण का प्रभाव इनकी रचना 'नरहरि चम्पू' पर है।

शब्द-शक्ति

भाषा की शक्ति का बोध शब्द शक्तियों से होता है, कारण कि शब्द शक्तियाँ उसके सामर्थ्य के स्तर को उजागर करती हैं। शब्द शक्ति की दृष्टि से दत्त द्विजेन्द्र का काव्य प्रधानतः अभिधामूलक है। दरअसल भारतेन्दु युग में अभिधाप्रधान काव्य की ही कल्पना की जा सकती थी क्योंकि उस समय न तो हिन्दी खड़ी बोली का स्वरूप स्थिर था और न ही उसका कोई व्यवस्थित व्याकरण था। कोई भी भाषा अपने प्रारम्भिक रूप-निर्माण और व्यवस्था के क्रम में अभिधा शक्ति का ही प्रयोग करती है। शब्द-शक्ति के लक्षण तथा व्यंजना स्तर, भाषा के अत्यंत समृद्ध हो जाने पर ही प्रकट होते हैं। यदि, आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक काल को ध्यान में रखा जाए तो यह देखने में मिलेगा कि भारतेन्दु युग और द्विवेदी युगीन भाषा अभिधाप्रधान है जबकि छायावादियों की भाषा लाक्षणिक एवं चित्रात्मक है। इसका प्रधान कारण काव्यभाषा का तथाकथित विकास ही है। यही कारण है कि दत्त द्विजेन्द्र की भाषा अभिधा को तो अच्छी तरह से अंगीकार कर लेती है, लेकिन लक्षणा एवं व्यंजना को अपनी कविता का अंग नहीं बना पाती। यह सिर्फ उनका ही नहीं, बल्कि उनके पूरे युग और उस युग के पूरे रचनाकारों की सबसे बड़ी सीमा थी। अपवाद के रूप में कहीं-कहीं शब्द शक्तियों के कुछ उदाहरण मिल जाते हैं। जैसे–सरोपा, लक्षणा का उदाहरण सुहत्संताप में मिलता है–"हिय सरोज सब विकसित करने वाला पूषण।"[16]

हृदयरूपी कमल अर्थ यहाँ सरोपा लक्षणा से प्राप्त होता है।

उपादान लक्षणा का उदाहरण

"जोक लगाई रक्त निकलावे पीढ़ा ताकी खोवै"[17] 'जोकलगाई' जोक लगाई नहीं जाती, बल्कि स्वयं लग जाती है इस तरह के यह जोक लगने का मात्र उपलक्षण है। इस प्रकार के उद्धरण भी उनके काव्य में यत्र-तत्र पाये जाते हैं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भाषा के स्तर

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

पर पंडित देवीदत्त त्रिपाठी 'दत्त द्विजेन्द्र' की सोच प्रधानतः भारतेन्दु युगीन भाषा-विषयक सोच से भिन्न नहीं है, लेकिन ये एक रचनाकार की दूरदृष्टि ही थी कि वे काव्यभाषा के लिए खड़ी बोली को राष्ट्रीय चेतना की मशाल के रूप में देख रहे थे। यही कारण है कि वे अंततः ब्रज मिश्रित खड़ी बोली को काव्य के लिए उपयुक्त समझने लगे थे, धार्मिक मिथ्या आडम्बर, कर्मकांड का विरोध तथा राष्ट्रीय चेतना के प्रसार हेतु जनसंपर्क के लिए काव्यात्मक चमत्कार प्रदर्शन से भी परहेज कर रहे थे जिसके परिणामस्वरूप शब्द-शक्ति, बिम्ब-विधान और प्रकृति की दृष्टि से दत्त द्विजेन्द्र जी का काव्य समृद्ध नहीं है, किन्तु इसका प्रधान कारण वे नहीं हैं बल्कि उनका युग है। भारतेन्दु युग में लक्षणा, व्यंजना शब्द-शक्ति युक्त काव्य की रचना, बिम्ब-विधान और प्रतीकविधान का समायोजन संभव था भी नहीं। हिन्दी भाषा (खड़ी बोली) का प्रारम्भिक रूप और ब्रजभाषा का भारतेंदुयुगीन रूप दोनों अपनी सीमाओं की वजह से ऐसा नहीं कर सके। द्विजेन्द्र जी को अलंकारों से कोई विशेष मोह नहीं था। सहज रूप से उनका प्रयोग दर्शनीय है। अनुप्रास, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, यमक, अर्थबोध के स्तर पर प्रयोग हुए हैं, चमत्कार के स्तर पर नहीं। जहाँ तक रसों की बात है, उनमें में भी किसी रस के प्रति उनका विशेष आग्रह नहीं है फिर भी कहीं-कहीं भक्ति रस, अद्भुत रस, रौद्र, वीर आदि के उदाहरण मिल जाते हैं। उनका छन्दों के प्रति विशेष मोह दिखाई पड़ता है, कुछ केशव जैसा यह उनका परंपरा मोह कहा जा सकता है, जो छन्दों के रूप में सुरक्षित रह गया। छंदों को अनेक रूपों में प्रस्तुत करना उन्हें अच्छा लगता है, इसी कारण वे उनके अतिरिक्त मोह से बच नहीं सके। छंदों का अनेक रूपों में उन्होंने युगानुकूल प्रयोग किया। जैसे–उर्दू की तर्ज पर सवैया छन्द और ग़जल। यह उनकी शिल्प की दृष्टि से दूसरी उपलब्धि कही जा सकती है। काव्य रूप की दृष्टि से उन्होंने विशेषकर मुक्तक रचनाओं की ओर ध्यान दिया, लेकिन उन्होंने कुछ ऐसे काव्य की भी रचना की है जो काफी महत्त्वपूर्ण हैं। जैसे–'नरहरि चम्पू' और 'मिथ्यावासुदेव भाण' आदि। इस रूप में उनका ऐतिहासिक महत्त्व है। सब मिलाकर शिल्प उनके काव्य का सहयोगी है।

संदर्भ-ग्रंथः

1. पं. त्रिपाठी देवीदत्त, नरहरि चम्पू, भगवान दीन प्रेस, कानपुर,1903, पृ. 5-6
2. पं. त्रिपाठी देवीदत्त, कान्यकुब्ज प्रबोधनम 'काव्य सुधाधर' त्रैमासिक पत्रिका 1961 वि. रसिक यन्त्रालय कानपुर, पृ. 29
3. पं. त्रिपाठी देवीदत्त, ललिताशतक, भगवन दीन प्रेस, कानपुर 1901 ई. पृ. 31
4. डॉ. शुक्ल दयाशंकर, हिंदी साहित्य को दत्त द्विजेन्द्र की देन, राजश्री प्रकाशन, मथुरा, 1978, पृ. 25
5. डॉ. शुक्ल दयाशंकर, हिंदी साहित्य को दत्त द्विजेन्द्र की देन, राजश्री प्रकाशन, मथुरा, 1978, पृ. 137-138
6. डॉ. शुक्ल दयाशंकर, हिंदी साहित्य को दत्त द्विजेन्द्र की देन, राजश्री प्रकाशन, मथुरा, 1978, पृ. 139-140
7. डॉ. शुक्ल दयाशंकर, हिंदी साहित्य को दत्त द्विजेन्द्र की देन, राजश्री प्रकाशन, मथुरा, 1978, पृ. 145-146
8. डॉ. शुक्ल दयाशंकर, हिंदी साहित्य को दत्त द्विजेन्द्र की देन, राजश्री प्रकाशन, मथुरा, 1978, पृ. 149
9. पं. त्रिपाठी देवीदत्त, कान्यकुब्ज प्रबोधनम 'काव्य सुधाधर' त्रैमासिक पत्रिका 1961 वि. रसिक यन्त्रालय कानपुर, पृ. 29
10. ब्रजरत्नदास (संपादक), भारतेन्दु ग्रंथावली भाग-1, नागरी प्रचारणी सभा काशी, संवत 2006, वि. पृ. 469
11. डॉ. शुक्ल दयाशंकर, हिंदी साहित्य को दत्त द्विजेन्द्र की देन, राजश्री प्रकाशन, मथुरा, 1978, पृ. 170
12. डॉ. शुक्ल दयाशंकर, हिंदी साहित्य को दत्त द्विजेन्द्र की देन, राजश्री प्रकाशन, मथुरा, 1978, पृ. 183
13. डॉ. शुक्ल दयाशंकर, हिंदी साहित्य को दत्त द्विजेन्द्र की देन, राजश्री प्रकाशन, मथुरा, 1978, पृ. 214
14. डॉ. शुक्ल दयाशंकर, हिंदी साहित्य को दत्त द्विजेन्द्र की देन, राजश्री प्रकाशन, मथुरा, 1978, पृ. 225
15. डॉ. शुक्ल दयाशंकर, हिंदी साहित्य को दत्त द्विजेन्द्र की देन, राजश्री प्रकाशन, मथुरा, 1978, पृ. 219
16. डॉ. शुक्ल दयाशंकर, हिंदी साहित्य को दत्त द्विजेन्द्र की देन, राजश्री प्रकाशन, मथुरा, 1978, पृ. 172
17. डॉ. शुक्ल दयाशंकर, हिंदी साहित्य को दत्त द्विजेन्द्र की देन, राजश्री प्रकाशन, मथुरा, 1978, पृ. 168

संपर्कः

रामनिरंजन झुनझुनवाला कॉलेज,
घाटकोपर (प), मुंबई – 400086

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

RNI NO. 18813/1969

रवीन्द्रनाथ टैगोर

7 मई, 1861 - 7 अगस्त, 1941

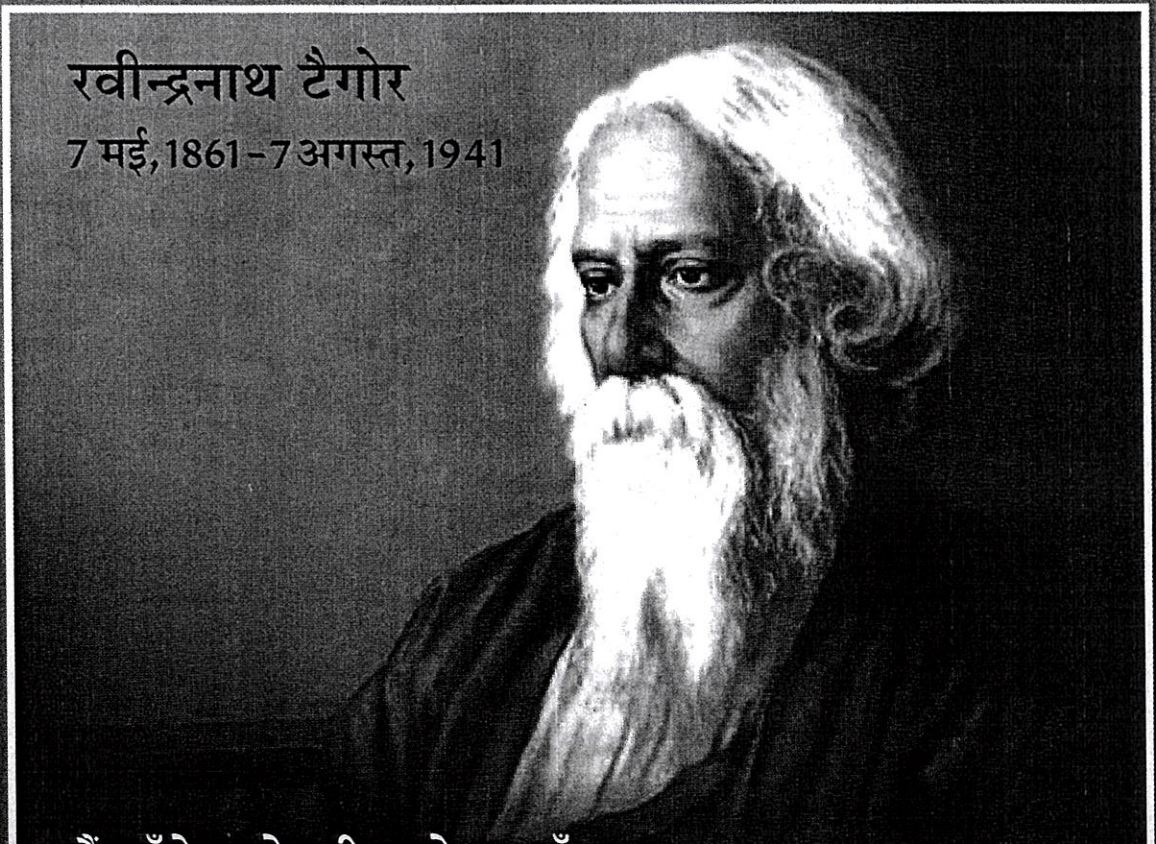

मैं यहाँ केवल तेरा गीत गाने आया हूँ,
अपनी विश्व-सभा में मुझे इतनी भर जगह दे दे!
तेरे संसार के अन्य किसी भी काम के मैं योग्य नहीं,
मेरे अकिंचन प्राण केवल तेरे गीत के स्वरों में ही बजते हैं।

रात की सुनसान बेला में,
जब देवालय में तेरी आरती हो,
उस समय हे स्वामी!
मुझे गाने का आदेश देना!
प्रभात में उषा की सुनहरी वीणा के तार बज उठेंगे,
तब मैं दूर उपेक्षित ही न रह जाऊँ बस इतना मान रख लेना!

मुद्रक व प्रकाशक श्री फ़िरोज़ पैच ने हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के स्वामित्व में फॉर्च्यून प्रिंट्स 'एन' बाईन्ड प्रायवेट लिमिटेड, 211, प्रगति इंडस्ट्रियल इस्टेट, एन. एम. जोशी मार्ग, लोअर परेल (पूर्व), मुम्बई - 400 011 से छपवाकर हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, महात्मा गाँधी मेमोरियल बिल्डिंग, 7 नेताजी सुभाष मार्ग, चर्नी रोड (पश्चिम), मुम्बई - 400 002 से प्रकाशित किया।
संपादक : संजीव निगम

Certified as

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.